











# सम्पादकीय

# सम्पादकीय

## वित्तीय स्थितियां अस्थिर

रोजगार के घटते अवसरों एवं अर्थव्यवस्था की धीमी होती रफ्तार ने कुल मिलाकर ऋण-ग्रस्तता की स्थिति को संगीन बना दिया है। इसके बीच निजी ऋणों की वापसी की स्थितियां प्रतिकूल हो गई हैं। आरबीआई की रिपोर्ट से भी इसके संकेत मिलते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की छमाही वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट मौजूद वित्तीय अस्थिरताओं के संकेत देती है। इस रिपोर्ट के साथ ही एक अंग्रेजी अखबार में आरटीआई के जरिए हासिल छपे आंकड़ों को देखें, तो यह संकेत गेस रूप में मौजूद दिखने लगता है। आरबीआई के मुताबिक कुल कर्ज में सितंबर 2024 तक नॉन परफॉर्मिंग ऋण (एनपीए) का अनुपात सिर्फ 2.6 फीसदी था, लेकिन मार्च 2026 तक इसके तीन प्रतिशत तक पहुंच जाने का अदैशा है। बहहाल, रिजर्व बैंक के एनपीए में माफ कर्जों को शामिल नहीं किया जाता है। गुजरे वर्षों में कॉरपोरेट्स के लिए ऋण माफी में भारी बढ़ोतरी हुई है। इस तरह एनपीए का बहुत बड़ा हिस्सा इस श्रेणी से हट गया है। खुद आरबीआई की रिपोर्ट में ऋण माफी में तीव्र वृद्धि पर चिंता जताई गई है। फिर रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि आर्थिक स्थितियां अनुमान से ज्यादा बिगड़ीं, तो एनपीए का अनुपात बढ़ कर 5 से 5.3 प्रतिशत तक जा सकता है। रिजर्व बैंक शिक्षा, मकान जैसे निजी ऋणों को ना चुकाने के मामलों में वृद्धि को लेकर भी चिंतित है। आम लोगों की घरेलू वित्तीय स्थिति के लगातार बिगड़ने के कारण ऐसे कर्जों पर डिफॉल्ट की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। आरटीआई से सामने आई सूचना के मुताबिक गोल्ड लोन पर डिफॉल्ट करने के मामले जून 2024 तक 30 प्रतिशत तक जा चुके थे। इस तरह बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों से स्वर्ण गिरवी रख कर लिए गए कर्जों में 6,696 करोड़ रुपये समय पर नहीं चुकाए गए थे। एक साल पहले ऐसे मामलों की संख्या 14 प्रतिशत ही थी। आरटीआई से हासिल सूचना से जाहिर है कि ऋण लेने वाले परिवारों ने जिस भरोसे सोना गिरवी रखा था, वह सही साबित नहीं हुआ। रोजगार के घटते अवसरों एवं अर्थव्यवस्था की धीमी होती रफ्तार ने कुल मिलाकर ऋण-ग्रस्तता की स्थिति को संगीन बना दिया है। इसके बीच निजी ऋणों की वापसी की स्थितियां प्रतिकूल होती जा रही हैं। सोने की कीमत में उछल के कारण भी गोल्ड लोन को चुकाना कठिन हो गया है। तो कुल मिला कर वित्तीय स्थितियां अस्थिर होती हुई दिख रही हैं।

“एक सम्भावा थी कि आपका द्वारा लिया गुण बुद्धि होना चाहिए तुम भी हस सकता है और जब आपकी समस्याएं ज्यादा बुरी न हों तब आपका समर्थन भी करता है।”



clickpic

जाए और तकनीकी शिक्षा को आत्मविश्वासी भी बनाएगा। जब



उत्तरार्द्ध का बाउलिंग का बायो मातृ-पिता का अधिकतर समय आजीविका अर्जित करने में व्यतीत होता है। इस स्थिति का फायदा उठाकर उसे गिरोह बच्चों को अपने जाल में फँसा लेते हैं। इन गिरोहों को यह भली-भांति पता होता है कि बच्चे नई तकनीकों को जल्दी सीखने और उपयोग करने में माहिर होते हैं। यही कारण है कि ये अपराधी गिरोह बच्चों को अपने डेंशनों के लिए प्रशिक्षित करने में सफलता पाते हैं। इस समस्या का समाधान केवल शिक्षा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। इसके लिए एक समग्र टूटिकोण अपनाने की आवश्यकता है। बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी का पाठ पढ़ना आवश्यक है। उन्हें यह समझाने की जरूरत है कि उनके कौशल और उनका बायो स्पष्टरक्तन का बायो में किया जा सकता है। कोडिंग, वेब डिज़ाइनिंग, एप्लिकेशन विकास और सॉफ्टवेयर निर्माण जैसे कौशलों में बच्चों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

जब बच्चों को यह एहसास होगा कि उनकी प्रतिभा समाज के लिए उपयोगी हो सकती है, तो वे अपराध से दूर रहने के लिए प्रेरित होंगे। सरकार को इस दिशा में ठेस कदम उठाने की आवश्यकता है। उस गिरोहों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिए। कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सर्कत रहते हुए अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। इसके साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना बेहद जरूरी है। स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की

पाठ्यक्रम का आभन्न हस्सा बनाया जाए। बच्चों को यह समझाने की जरूरत है कि तकनीकी ज्ञान केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए भी है। माता-पिता और शिक्षक समाज की नींव हैं। उन्हें बच्चों की गतिविधियों और दिनचर्या पर नजर रखनी चाहिए। बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना और उनके मनोबल को सही दिशा में बढ़ाना अनिवार्य है। बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि त्वरित धन और शीघ्र सफलता के लालच केवल भ्रम है, जो उनके भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं। इसके विपरीत, छोटे-छोटे सकारात्मक प्रयास समाज और देश की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

डिजिटल युग में तकनीकी शिक्षा बच्चों के लिए एक सशक्त माध्यम बन सकती है। यदि बच्चों को कोडिंग, ऐप विकास, सॉफ्टवेयर निर्माण, और डिजाइनिंग जैसे तकनीकी कौशल सिखाए जाएं, तो वे अपनी ऊर्जा और क्षमताओं का रचनात्मक उपयोग कर सकते हैं। यह न केवल उनके करियर को सशक्त बनाएगा, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और बच्चे यह समझने लगग कि उनका तकनीकी प्रतिभा से समाज को लाभ हो सकता है, तो वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाएंगे। समाज, सरकार और परिवार के सामूहिक प्रयासों से ही इस समस्या का स्थायी समाधान संभव है। माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों को सही दिशा में प्रेरित करना होगा। समाज को यह समझना होगा कि बच्चों का भविष्य केवल तकनीकी शिक्षा पर निर्भर नहीं है, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों को सिखाने पर भी आधारित है। यह प्रयास केवल एक समस्या का समाधान नहीं होगा, बल्कि यह एक नई दिशा का प्रारंभ होगा। एक ऐसा भविष्य, जहाँ हर बच्चा अपनी क्षमता का उपयोग समाज की भलाई के लिए करेगा और अपराध से दूर रहेगा। सामूहिक प्रयासों से हम न केवल बच्चों को सुरक्षित बना सकते हैं, बल्कि समाज को भी सुदृढ़ और प्रेरणादायक बना सकते हैं। यह एक नई सुबह का आगाज़ होगा, जहाँ हर बच्चा अपने कौशल का उपयोग सृजनात्मक और सकारात्मक कार्यों में करेगा और समाज के लिए अमूल्य योगदान देगा।

રાશાફેલ



	आज आपका दिन उत्तम रहेगा। आपको बिजनेस में कुछ लोगों से मदद मिलेगी। दाम्पत्य जीवन में आपसी समझ और प्यार रिश्ते को और भी बेहतर बनायेंगे। आपका सामाजिक जीवन आज हर तरह से बेहतर बना रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपको काम के लिये बाह्वाही मिलेगी। आर्थिक स्थिति में प्रगति होगी। आप खुद को सही साबित करने में सफल रहेंगे।
	आज आपको तरक्की के कुछ नये साधन मिल सकते हैं। आपको बड़े-बुजुंगों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। आज आपका मूड काफी अच्छा रहेगा। बिजनेस में सब कुछ सामान्य रूप से बना रहेगा। दाम्पत्य रिश्ते में एक बार फिर से ताजगी भरने के लिये आज का दिन बढ़िया है। आप कुछ नये विचारों के साथ अपना खास काम शुरू कर सकते हैं।
	आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहेगा। अचानक लाभ होने के योग हैं किसी अनुकूल संपर्क के कारण आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सक्षम होंगे। मित्र और सहकर्मी आपके प्रयासों में आपका समर्थन करेंगे। आपको अपने कार्य क्षेत्र में असीम विजय मिलेगी। आज किसी की राय आपके लिये कारगर साबित हो सकती है।
	आज आपका दिन पहले की अपेक्षा अच्छा रहेगा। कुछ अच्छे लोगों से आपकी मुलाकात दिन को और बेहतर बना सकती है। जीवन में तरक्की के नये रसें भी खुलेंगे। ऑफिस में आपके काम की तारीफ हो सकती है। अपने कुछ खास काम निपटाने के लिए आपको अपने रुटीन में बदलाव करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।
	आज आपका दिन ठीक-ठाक रहेगा। आप सामाजिक कार्यों में हिस्सा ले सकते हैं। ऑफिस में आपको नया काम मिल सकता है, जिसमें आप अपनी मेहनत से सफलता हासिल करेंगे। परिवार से जुड़े किसी काम के लिए थोड़ी भागदौड़ हो सकती है। आपकी यात्राएं फलीभूत होंगी आप अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ सैर सपाटे की योजनायें भी बना सकते हैं।
	आज आपका दिन शानदार रहेगा। बचपन के किसी दोस्त का आज फोन आ सकता है, बात के दौरान कुछ पुरानी यादें ताजा होंगी। आपके अधरे काम पूरे हो जायेंगे। बिजनेस में नए एग्रीमेंट हो सकते हैं। संपत्ति बढ़ाने की योजना सफल हो सकती है। आज आपकी कुछ महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात होंगी। शिक्षक आज किसी मीटिंग में शामिल होंगे।

# पर बाधित हो जाएगा

जिससे सोशल मीडिया के इस नापाक व्यापार मॉडल और फैक्टचेकिंग की आवश्यकता पर बहुत अधिक सार्वजनिक आक्रोश पैदा हो सकता है। फेसबुक ने अपना प्लेटफॉर्म न्यूट्रल फैक्टचेकर्स के लिए उपलब्ध कराया। इससे कुछ हद तक अफवाहों के प्रसार पर अंकुश लगा। क्योंकि एक बार किसी समाचार/घटना को फैक्टचेकर्स द्वारा गलत साबित करने के बाद, व्यवस्था की गई थी कि यह समाचार कतार के नीचे तक गिर जाएगा। फिर भी, अगर किसी ने इसे भेजने की कोशिश की, तो उन्हें चेतावनी दी गई कि -यह पाठ असत्य है। अब कोई व्यवस्था नहीं होगी। चूंकि इसमें से किसी भी कंपनी ने फैक्टचेक न करने का फैसला नहीं किया है, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि दोनों मीडिया अब से झूठ बोलने वालों के चालक बन जाएंगे। लेकिन फेसबुक के बारे में एक सांत्वना है। यानी यूपीय देशों में इसकी इजाजत नहीं दी जाएगी। यूपीय देश सोशल मीडिया कंपनियों को लेकर बेहद सजग हैं। यह अच्छी तरह से जानते हुए कि इन कंपनियों को उन देशों में काम करने की अनुमति नहीं थी, मेटा के जुकरबर्ग ने फैक्टचेकर्स को केवल इसलिए रद्द करने का फैसला किया क्योंकि वह यूपीय कट्टरपंथियों से अवगत थे। संयुक्त राज्य अमेरिका के बजाय यूरोप ने अक्सर मेटा जैसी गैर-जिम्मेदार कंपनियों के जीवन को %मेटा% में ला दिया है। इस संदर्भ में भारत जैसे देशों को भी सावधान रहना चाहिए और अमेरिका में झूठ का प्रसार होना चाहिए। ऐसा साफ-सुथरा स्टैंड लें। नहीं तो फेकूंचंद के फाल्युनोत्सव से हमारा सामाजिक जीवन और बाधित हो जाएगा। वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार, लेखक, समीक्षक एवं टिप्पणीकार

Digitized by srujanika@gmail.com

**नकला जारी गुणवत्ताहान  
दवाओं का बढ़ता दायरा**

के लिए उपचार की आवश्यकता भी होती है, लेकिन जब उपचार नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं पर आधारित हो तो इसनामों का स्वास्थ्य पूरी तरह से प्रभावित होता है। नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का बढ़ता दायरा केवल पीड़ित लोगों के जीवन खतरे में नहीं होते हैं, बल्कि स्वास्थ्य प्रणाली और चिकित्सा उद्योग की विस्तृतीयता भी प्रभावित होती है। भारत में इन दिनों नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। भारत का कोई ऐसा राज्य नहीं है जो नकली दवाओं से प्रभावित न हो। हाल में कोलकाता में कैंसर और मधुमेह जैसे अंगूष्ठी बीमारी में उपयोगी होने वाली नकली दवाओं को केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और पश्चिम बंगाल के औषधि नियंत्रण निदेशालय के साझा सहयोग से पकड़ा गया है जिसकी कीमत 6.60 करोड़ बताई गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में कुल बिकने वाली दवाओं में बीम प्रतिशत नकली और गुणवत्ताहीन दवा शामिल हैं। भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में केवल दवा का बाजार लगभग दो लाख करोड़ का है जिसमें नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं की भागीदारी 15 से 20 प्रतिशत के करीब है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार जैसे राज्य शामिल हैं। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने केवल 2023 में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं के लगभग 50 हजार मामले दर्ज किए थे। उद्योग संगठन एसोसिएट की रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के दवा बाजार में कुल उपलब्ध एक एक-चौथाई दवा नकली और गुणवत्ताहीन है। 1% फेक एंड काउंटरफॉर्ट ड्रग्स इन इंडिया-बूमिंग बिज' नामक अध्ययन की रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में नकली दवाओं का कारोबार 33 प्रतिशत की वृद्धि दर से प्रति वर्ष बढ़ रहा है। नकली दवाओं का बाजार बढ़ने के कारण है, जिसमें दवा की ऑनलाइन बिक्री, गुणवत्तापूर्ण दवा की अपेक्षा नकली दवा का सस्ती कीमत, दवाओं के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी, डॉक्टर द्वारा मरीजों के पचे पर लिखे गए दवा के नाम के साथ प्रमाणित दवा कंपनियों का नाम न लिखना, बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सविधाओं का उपलब्ध न होना, नकली और गुणवत्ताहीन दवा

की पहचान करने की तकनीकी का न होना, ठेस कानून का आभाव के कारण नकली दवा का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवा की बिक्री शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होती है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का बढ़ता दायरा चिंता का विषय है। भारत जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा निर्माता और निर्यातक है। एशियन लाइट की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक फार्मा बाजार में भारत की हिस्सेदारी 13 प्रतिशत है। भारत में बढ़ते नकली दवा से केवल न इंसनों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है बल्कि इससे भारत की वैश्विक स्तर पर दवा उद्योग में छवि भी धूमिल होती है। नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं के प्रचलन से चिकित्सा पेशे और स्वास्थ्य प्रणाली से जनता कविश्वास भी घटता है। नकली दवा के रोकथाम के लिए कानूनी प्रावधानों में परिवर्तन करते हुए नकली दवाओं के उत्पादन और बिक्री में संति स्वयंक्रियों के लिए बहुत सख्त और दंड के साथ अर्थिक जुर्माने का प्रावधान होना चाहिए। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और राज्य स्तर पर दवा नियामक संस्थानों को दवाओं के प्रति सासाहिक प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। सभी दवा कमानियों को सभी प्रकार के दवा उत्पाद पर ट्रैक और ट्रैस तकनीक का उपयोग के लिए सरकार द्वारा बाध्य किया जाना चाहिए ताकि मरीज नकली और असली दवाओं की पहचान आसानी से कर सकें। दवा की प्रामाणिकता जांचने के लिए मोबाइल एप और ऑनलाइन डेटाबेस की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं की रोकथाम के लिए वैश्विक स्तर पर एक जुट होकर समस्या का समाधान तलाश करना होगा। भारत को नकली दवाओं को रोकने के लिए बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाना होगा। बढ़ती जनसंख्या, निर्धनता और महंगी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण लोगों को सस्ती और नकली दवाओं पर बाध्य होना पड़ता है। भारत को नाइजीरिया और अमेरिका की तकनीकी मेडिसेफर एवं ट्रैक एंड ट्रैस सिस्टम की पहल करना चाहिए। यह तकनीकी नकली आपूर्ति श्रृंखला नजर रखती है। सख्त कार्रवाई से ही स्वस्थ भारत और सशक्त भारत का निर्माण होगा।



























